धर्म और अध्यात्म के रूप में जीवन में रची-बसी है होली

आत्मा का मंगल मिलन तो परमात्मा से ही हो सकता है क्योंकि मंगलकारी तो एक परमात्मा ही हैं, जिन्हों शिव कहा जाता है। अत: मंगल मिलन के लिए तो ज्ञान रंग चाहिए। परन्तु मंगल मिलन के वास्तविक अर्थ को न जानने के कारण आजकल तो लोग होली के दिन एक दूसरे पर गुलाल और अबीर डालकर गले मिलते हैं। क्या इसे हम मंगलमिलन कह सकते हैं? मंगल मिलन तो तभी होगा जब लोगों के हृदय शद्ध हों और वे एक दूसरे के प्रति द्रेष, ईर्ष्या इत्यादि समाप्त कर एक दूसरे को भाई-भाई समझकर ऐसे मिलें कि भेदभाव और अमंगल हो ही नहीं।

जैसे आत्मा के बिना शरीर बेकार हो जाता है और उसे मुर्दा समझकर जला दिया जाता है, वैसे ही आध्यात्मिक अर्थ को समझे बिना त्योहार मनाना भी बेकार ही है, क्योंकि भारत के सभी त्योहार आध्यात्मिक अर्थ के लिए हुये हैं। अत: होली के लिए भी आध्यात्मिक रहस्य को समझना चाहिए क्योंकि उस आध्यात्मिक अर्थ का आधार लेने से ही लोक और परलोक अथवा व्यवहार और परमार्थ दोनो सिद्ध हो सकते है।

होली का त्योहार शिवरात्रि के बाद ही क्यों?

भारत में जो भी त्योहार मनाये जाते है उनमें एक ज्ञान युक्त क्रम अथवा सिलसिला भी है उस क्रम के रहस्य को भी जानना चाहिए। उस कम में होली से पहले शिवरात्रि का उत्सव आता है। वह उत्सव परमपिता परतात्मा शिव की याद में मनाया जाता है, जैसे कि शिवनाम के अर्थ से ही सिद्ध है, परमात्मा शिव का अवतरण मनुष्यों के कल्याणार्थ ही होता है। उनके अवतरण से पूर्व मनुष्यों पर पांच विकारों का रंग चढा होता है। सारे संसार में अज्ञान रात्रि छाई होती है। ऐसे समय में ही सत चित् आनन्द स्वरूप परमात्मा शिव आकर अपने संग का रंग अर्थात ज्ञान योग का रंग मनुष्यात्माओं को प्रदान करते हैं उस वृत्तान्त की याद में आज तक शिवरात्रि के ही बाद होली मनाई जाती है। इससे स्पष्ट है कि ज्ञान के रंग से आत्मा की चोली को रंगना ही वास्तविक होली मनाना है

माया का रंग तो हर एक मनुष्यों पर चढा हुआ है अब ईश्वरीय रंग के आत्मा को रंगना ही होली के आध्यात्मिक अर्थ का आधार है। परमात्मा के संग अथवा ज्ञान का रंग ही वास्तव में उल्लास देने वाला रंग है। क्योकि जब परमात्मा ज्ञान रंग लगाते हैं अब आत्मा पवित्र रहने का व्रत लेती है आर्थत पवित्रता की रक्षा करती है। इसलिए होली के बाद रक्षाबन्धन का त्योहर मनाया जाता है। आजकल होली के दिन छोटे बडे सभी मिलकर एक दूसरे के साथ होली खेलते हैं, यहां तक कि जबरदस्ती भी रंग लगाते है। वास्तव में लागना तो चाहिए ज्ञान का रंग परन्तु देह अभिमानी लोग भैतिकवाद तथा बहिर्मुखता के कारण आध्यात्मिकता को तिलान्जलि देकर और भौतिक रंग एक दूसरे को बुरी तरह लगाकर इस निर्धन देश के करोडों रूपयों के रंग और कपडे.खराब कर देते हैं। ऐसी होली खेलने का क्या लाभ जिसमें खेल ही खेल में अनेक लोगों का दिल दुखता है और देश का धन भूखों की भूख मिटाने के काम न आकर धूल में मिल जाता है।

आप किस रंग में रंगे हैं?

ज्ञानी और योगी की दृष्टि में तो यह मनुष्य सृष्टि ही एक विराट खेल है। यह सृष्टि रूपी खेल दोरंगी लीला है। इस सृष्टि में दो ही रंग है एक माया का रंग और दूसरा ईश्वर का रंग इस रंग मंच पर हर एक मनुष्य दोनों में से एक न एक रंग में तो रंगता ही है। नि:संदेह ईश्वरीय रंग में रंगना श्रेष्ठ होली मनाना है, क्योकि इस रंग में रंगा मनुष्य ही योगी है। माया के रंग में रंगा हुआ मनुष्य तो भोगी है। अब हर एक मनुष्य को स्वयं अपने आपसे पुछना चाहिए कि मैं किस रंग में रंगा हुआ हूं। माया के रंग में या ईश्वर के रंग में? कुसंग के रंग में या सत्संग के रंग में? ओहो यदि मैने ज्ञान होली न मनाई तो मेरी आत्मा की होली तो बेरंगी रह जायेगी। तब मैं आत्मा अपने पिया परमात्मा के घर में जाऊंगी कैसे? मंगल मिलन मनाऊंगी कैसे?

मंगल मिलन या जंगल मिलन ?

आत्मा का मंगल मिलन तो परमात्मा से ही हो सकता है क्योकि मंगलकारी तो एक परमात्मा ही है जिन्हें शिव कहा जाता है। अत:मंगल मिलन के लिए तो ज्ञान रंग चाहिए। परन्तु मंगल मिलन के वास्तविक अर्थ को न जानने के कारण आजकल तो लोग होली के दिन एक दूसरे पर गुलाल और अबीर डालकर गले मिलते है क्या इसे हम मंगल मिलन कह सकते है मंगल मिलन तो तभी होगा जब लोगों के हृदय शुद्ध हों और वे एक दूसरे के प्रति द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि समाप्त कर एक दूसरे को भाई- भाई समझकर ऐसे मिलें कि भेदभाव और अमंगल हो ही नहीं परन्तु आज आजकल तो भारतवासी खूब ही होली मना रहे हैं। परन्तु आज व्यवहार में तो लोग जंगल मिलन ही मना रहे है कैसे जंगल मिलन ही मना रहे हैं जैसे जंगल में हिंसक पशु एक दूसरे को देखते ही हड़प करने की सोचते है। वैसे ही आज अनुशासन खत्म हो चुका है और अब तो जंगल का विधान ही लागू है, यह सभी स्थूल रंग से या गुलाल और अबाीर से मंगल मिलन मनाने से थोडे ही ठीक होगा। आप जानते हैं कि चीनी और भारतवासी कल तक तो एक दूसरे को भाई-भाई कहते थे परन्तु आज वे खून से एक दूसरे की चोली रंगने के लिए तैयार हैं। आज इस देश में भाषा भेद, प्रान्त भेद, पार्टी भेद, मतभेद इत्यादि कितने ही भेद हैं और उनसे कितने परस्पर सम्बन्ध विच्छेद हुए हैं। जिस प्रकार ये भेद बढते जा रहे है उससे तो ऐसा लगता है कि एक दिन खून की होली खेली जायेगी जिसका वर्णन महाभारत में कौरव युद्ध के रूप आत है। अब अपने आप ही सोचिये कि स्थूल रंग से मंगल मिलन अथवा होली मनाने का कोई अर्थ है ? इसका कोई लाभ है ?

होली का त्योहार कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम की याद दिलाता है क्योंकि तब ही परमपिता परमात्मा शिव ने अवतरित होकर ज्ञान होली खेली और आत्माओं ने उनके साथ मंगल मिलन मनाया।
हिरण्यकश्य का वृतांत लाक्षणिक रूप में संगम काल में ही घटाया जा सकता है। हिरण्यकश्यप के बारे में यह तो बात प्रसिद्ध है कि उसे वरदान मिला हुआ था कि अन्दर मरूं न बाहर, न दिन हो न रात वह संगम की याद दिलाता है, क्योंकि सतयुग और कलियुग को ब्रह्मा का दिन और द्वापर तथा कलियुग को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं और दोनों के संगम को न दिन न रात्रि कहा जा सकता है।

होली कैसे मनायें ?

इसलिए हम कहते हैं कि अब भी समय है कि मनुष्य ज्ञान रंग द्वारा अपने हृदय को प्रभु के रंग में रंगले ऐसी होली ईश्वरीय मर्यादा की ही है स्थूल रंग वाली होली में लड़ाई झगड़ा ही अधिक होता है। छोटे बच्चे बड़ों की पगडी उतारने है और बड़े भी एक दूसरे के ऊपर कीचड़ उछालते हैं और एक दूसरे को गाली गलौच भी देते है कैसी विडम्बना है कि आज ऐसे पावन पर्व को लोगों ने हुल्लडबाजी का पर्व बना दिया है। थोडे समय पूर्व तक भारत के कई नगरों में यह रिवाज चला आता था कि होली के दिनों में नगरों में देवी देवताओं के स्वांग निकालते थे। स्वांगों के चेहरों पर पाउडर और अभ्रक लगाकर देवताओं के चेहरों को बडे सुन्दर और तेजोमय प्रदर्शित करने का यत्न किया जाता था देवताओं के स्वांगों के मस्तकों पर भृकुटी के स्थल पर छोटे-छोटे बल्ब लगे होते थे जो कि देवताओं की आत्माओं की जागृति के सूचक होते थे। ये स्वांग नगर के प्रमुख रास्तों से गुजरते थे इन जूलूसों में देवता लोग कहीं कहीं रास करते हुये भी दिखाये जाते थे। जूलूस तथा सवारी में सबसे आगे बैल पर शिव की सवारी होती थी इस प्रकार होली मनाकर लोग देवताओं की निरोगी, तेजोमय आकृति उल्लासपूर्ण जीवन इत्यादि की झांकियां अपने सामने लाते थे ताकि अपने जीवन मे लक्ष्य की झलक आंखों मे सामने आ जाये और एक बार फिर अपने पूर्वजों एवं पूज्यों की याद भी आ जाये ये सवारी अथवा जूलूस इस रहस्यों के स्मारक थे कि जब परमात्मा शिव इस सृष्टि में आते हैं तो उनके पीछे देवी देवताओं का जमाना आता है, भले ही इस रीति से होली मनाना कुछ अच्छा था, परन्तु आज क्यों न हम ऐसी होली मनायें कि स्वांगों की बजाय सतयुग के साक्षात् देवी देवताओं का जमाना फिर से लौट आये और सभी की आत्मा बल्ब के समान जग जाय वास्तव में ऐसी होली ही तो परमार्थिक होली है, जिसे एक बार खेलने से मनुष्य का जन्म जन्मान्तर मंगलमय हो जाता है परन्तु आज जो लोग उपयुक्त रीति से वास्तविक होली मनाते हैं उनकें बारे में लोग कहते हैं अजी ये कोई

होली थोडे ही मना रहे हैं उनकी यह बात सुनकर कबीर का यह दोहा याद आता है। रंगी नारंगी कहें बना दूध का खोया, चलती को गड़ी कहें देख कबीरा रोया।

संसार में तो उल्टी चाल है यदि आप वास्तविक होली मनायें तो कहते हैं इस बार होली फीकी रही और यदि नगर में हुल्लड़बाजी हो तब समझते हैं कि इस बार होली अच्छी लगी। परन्तु वे नहीं जानते कि द्वापरयुग और कलियुग की गुलाल अबीर की होली तो संगम की वास्तविक होली की यादगार है जो कि ज्ञान रंग से खेली गई।

होली संगम का त्योहार है-

होली का त्योहार कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम की याद दिलाता है क्योंकि तब ही परमपिता परमात्मा शिव ने अवतरित होकर ज्ञान होली खेली और आत्मओं ने उनके साथ मंगल मिलन मनाया हिरण्यकश्यप का वृत्तांत लाक्षणिक रूप में संगम काल में ही घटाया जा सकता है। हिरणकश्यप के बारे में यह तो बात प्रसिद्ध है कि उसे वरदान मिला हुआ था कि अन्दर मरूं न बाहर, न दिन हो न रात वह संगम की याद दिलाता है क्योकि सतयुग और कलियुग को ब्रह्मा का दिन और द्वापर तथा कलियुग को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं और दोनों के संगम को न दिन न रात्रि कहा जा सकता है अत: वर्तमान समय परमपिता शिव परमात्मा से हमे प्रैक्टिकल रुप में ज्ञान की होली और मंगल मिलन मना रहे हैं क्योंकि अब संगम युग है। परन्तु इस रहस्य से अनभिज्ञ लोग स्थूल रंग को होली मनाकर समय, धन ,वस्त्र और शक्ति व्यर्थ गंवा रहे हैं और जंगल मिलन मना रहे हैं।

होली को होली के रूप में मनाओ-

अब हमें भगवान के आज्ञानुसार आपसी शत्रुता और द्वेष को मिटा देना चाहिए और आपस में जो अनुचित बातें हो चुकी है, उन्हें होली समझकर होली मनानी चाहिए। ऐसी होली मनाने से ही यथार्थ मंगल मिलन होगा। बीती ताई बिसार दे आगे की, सुधि ले जो बन आये सहज में ताही में चित दे, इस शिक्षा पर चलकर और आत्मा की चोली ज्ञान से रंगकर परमात्मा से वास्तविक मंगल मिलन मनाना चाहिए।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com